अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 24 जुलाई, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) सम्यक्त्व पराक्रम का अन्तिम फल है-

(क) मोक्ष-प्राप्ति (ख) संयम-प्राप्ति

(ग) समकित-प्राप्ति (घ) सुख-प्राप्ति ( )

(b) जीव व्रत के छिद्रों को ढँकता है-

(क) आलोचना से (ख) प्रतिक्रमण से

(ग) निंदा से (घ) गर्हा से ( )

(c) जीव परीषहों को जीतता है -

(क) मुक्ति से (ख) शान्ति से

(ग) आर्जव से (घ) मार्दव से ( )

(d) संतोष गुण की प्राप्ति होती है -

(क) धन-प्राप्ति से (ख) मान-प्राप्ति से

(ग) लोभ-विजय से (घ) रोग-मुक्ति से ( )

(e) साम्परायिक कर्माश्रव के भेद हैं -

(क) 39 (ख) 42

(ग) 5 (घ) 20 ( )

(f) प्रमोद भावना का विषय है -

(क) गुणीजन (ख) दुःखीजन

(ग) प्राणिमात्र (घ) अयोग्यपात्र ( )

(g) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में कर्मों की उत्तर प्रकृतियों का उदय रहता है-

(क) 17 (ख) 60

(ग) 55 (घ) 01 ( )

(h) दूसरे गुणस्थान में काल करने वाला जीव गति में नहीं जाता है-

(क) देवगति (ख) मनुष्यगति

(ग) तिर्यंच गति (घ) नरक गति ( )

(i) स्थानकवासी परम्परा में मान्य आगम हैं-

(क) 45 (ख) 32

(ग) 11 (घ) 12 ( )

(j) भूतकाल अर्थ में अकारान्त धातु में प्रत्यय लगता है -

(क) ईअ (ख) हिइ

(ग) ईण (घ) हिमि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) निन्दना से जीव को पश्चात्ताप होता है। ( )

(b) सामायिक से जीव दर्शन-विशुद्धि को प्राप्त करता है। ( )

(c) वैयावृत्य से जीव तीर्थंकर नामकर्म का बन्ध करता है। ( )

(d) मान-विजय से जीव आर्जव गुण को प्राप्त करता है। ( )

(e) योग के शुभत्व व अशुभत्व का आधार भावना है। ( )

(f) किसी के द्वारा आचरित पाप को प्रकट करना निसर्ग क्रिया है। ( )

(g) तीर्थंकर नामकर्म का बन्ध सम्यक्त्व सापेक्ष है। ( )

(h) आहारक द्विक का उदय संयतों को अप्रमत्त अवस्था में संभव है। ( )

(i) जैन धर्म का मौलिक इतिहास की रचना जैनाचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने की। ( )

(j) भय अर्थ में, भय के कारण में तृतीय विभक्ति होती है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मुझसे जीव अकिंचनत्व का प्राप्त करता है। .....

(b) मुझसे जीव अनुत्तर धर्म-श्रद्धा को प्राप्त करता है। .....

(c) मुझसे जीव करण-शक्ति को पाता है। .....

(d) मुझसे जीव उच्च गोत्र कर्म का बन्ध करता है। .....

(e) मेरी लम्बाई 21 अंगुल व चौडाई 16 अंगुल होती है। .....

(f) मैं पुण्य का आस्रव हूँ। .....

(g) मैं पाँच व्रतों में प्रधान व्रत हूँ। .....

(h) मेरा बन्ध संयम-सापेक्ष है। .....

(i) मैं एक ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें प्रमत्त अवस्था होते हुए भी किसी आयु का बन्ध नहीं होता है। .....

(j) मैं एक कारक हूँ, मुझमें चतुर्थी विभक्ति होती है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखिए - **14x2=(28)**

निम्न सूत्रों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(a) गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं विणय-पडिवत्तिं जणयइ।

.....

.....

(b) काउस्सग्गेणं तीय-पडुपन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ।

.....

.....

(c) **थव-थुइ-मंगलेणं नाण-दंसण-चरित्त बोहिलाभं जणयइ।**

.....

.....

(d) **सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ।**

.....

.....

(e) **विवित्त-सयणासणयाए णं चरित्त गुत्तिं जणयइ।**

.....

.....

(f) **कायवाङ्-मनः कर्मयोगः।**

.....

.....

(g) **निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम्।**

.....

.....

(h) **विघ्नकरणमन्तरायस्य।**

.....

.....

(i) **देश सर्वतोऽणुमहती।**

.....

.....

(j) **प्रथम गुणस्थान में कौन-कौनसी प्रकृत्तियों का बन्ध नहीं होता है?**

.....

.....

(k) **दसवें गुणस्थान के अन्त में किन-किन प्रकृतियों का बन्ध-विच्छेद होता है?**

.....

.....

(l) **कौन-कौनसी प्रकृत्तियों का बन्ध नहीं होता है, लेकिन उदय होता है?**

.....

.....

(m) **दूसरे व पाँचवें गुणस्थान में कितनी-कितनी प्रकृत्तियों का उदय संभव है?**

.....

.....

(n) **मुखवस्त्रिका लगाने के कोई दो प्रयोजन लिखिए।**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **भाव-सत्य से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(b) **सद्भाव-प्रत्याख्यान से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(c) **आहार-प्रत्याख्यान से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(d) **क्षमापना से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(e) **प्रत्याख्यान से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(f) **धर्मश्रद्धा से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है?**

.....

.....

.....

.....

(g) **अकाम निर्जरा व बालतप में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **सत्यव्रत की भावनाएँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(i) **चौदह गुणस्थानों में बन्ध योग्य प्रकृतियों की संख्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **चौदहवें गुणस्थान में उदय योग्य प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **निर्ग्रन्थ धर्म के 6 अन्य नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **स्थानकवासी सम्प्रदाय की कोई तीन मौलिक मान्यताओं का उल्लेख कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(m) **निम्न वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए-**

वह धर्म में प्रमाद करता है। .....

मैं शिष्य को शास्त्र देता हूँ। .....

तीर्थंकरों को नमस्कार हो। .....

(n) **निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-**

विही संसारं रचीअ। .....

महू नेत्तेण काणो। .....

तरुहिन्तो फलाणि पडन्ति। .....